कपास के प्रमुख कीट एवं उनका समन्वित प्रबंधन

कृषि कुंभ (नवंबर 2023),
खण्ड 03 अंक 06, पृष्ठ संख्या 29–30

कपास के प्रमुख कीट एवं उनका समन्वित प्रबंधन

डॉ. प्रदीप कुमार[1], डॉ. ए.के. चौधरी[1] विपुल शर्मा कुमार[2] डॉ. हरपाल सिंह[3]
[1]कीट विज्ञान विभाग,
[2](शोध छात्र) कीट विज्ञान विभाग,
[3]उद्यान विज्ञान विभाग, कृषि विज्ञान संस्थान,
बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, झाँसी (उत्तर प्रदेश), भारत।
Email Id: pradeepentomology@gmail.com

कपास खरीफ की फसल के साथ एक नगदी फसल है। इसका मूल स्थान भारत है। यह मालवेशी कुल का सदस्य है, संसार में इसकी दो किस्में पायी जाती है, प्रथम को देशी कपास और दूसरे को अमेरिकन कपास के नाम से जाना जाता है, कपास के पौधे बहुवर्षीय झाड़ीनुमा होते है, जिनकी लम्बाई 2–7 फीट होती है। कपास की खेती भारत की सबसे महत्वपूर्ण रेशा वाली फसल है। कपास की खेती लगभग पूरे वर्ष की जाती है, कपास की खेती वस्त्र उद्योग को बुनयादी ढांचा प्रदान करती है। भारत में कपास की खेती लगभग 6 मिलियन किसानो को प्रत्यक्ष तौर पर आजीविका प्रदान करती है, हमारे देश में कपास की खेती को सफेद सोना भी कहा जाता है। इनके बिनौले से रेशा प्राप्त किया जाता है।

कपास का पत्ती लपेटक

इस कीट की केवल सूंडी हानिकारक होती है, जिसे गिडार भी कहते है, इस कीट का प्रकोप जुलाई से अक्टूबर माह तक रहता है, यह कीट हल्का पीलापन लिए हुए सफ़ेद होता है, इसकी लम्बाई 2.5 सेंटी मीटर होती है। शरीर पर 2 जोडी सफ़ेद पंख होते है, जिनके ऊपर बादामी रंग की लहरदार तिरछी धारिया होती है। यह कीट पत्तियों को निम्न तल की और मोड़कर रेशमी धागो से बांध कर अंदर खाती रहती है, जिससे पत्तिया कई जगह कटी हुई दिखाई देती है।

धब्बेदार सूंडी

इसे चितकबरी सूंडी के नाम से भी जाना जाता है। यह कीट लगभग पूरे वर्ष सक्रिय रहता है, इस कीट की केवल सूंडी हानिकारक होती है। मादा कीट पौधे के कोमल भागो में अंडे देती है, जिससे छोटी–छोटी सून्डियां निकलकर पहले कोमल पत्ती को खाती हैं, इसके पश्चात छोटे–छोटे गोलों में छेद करके अंदर घुस जाती है, जिससे रुई की किस्म एवं उपज दोनों पर ही इस कीट के आक्रमण का प्रभाव पड़ता है। अधिक आक्रमण होने पर क्षति 80 प्रतिशत तक हो जाती है। इस कीट का सिर छोटा, आँखे बड़ी और काली होती है, इसका शरीर गुलाबी रंग लिए हुये सफ़ेद होता है।

कपास की लाल सूंडी

यह कीट जाड़ों में बिनौलों के अंदर सूंडी अवस्था में शीत निष्क्रियंता में रहता है तथा इन्ही बीजो के साथ ये खेत में पहुंचते है, जहा ये सूंडी कृर्मिकोष में बदलकर प्रौढ़ कीटो में परिवर्तित हो जाती है, इस कीट की सून्डियाँ हानिकारक होती है, सून्डियाँ प्रारम्भिक अवस्था में कोमल पत्तियों टहनियों और फूलो में जीवन निर्वाह करती है। गोले लगने पर सूंडी उन

पर आक्रमण करती है, तथा छेद बनाकर अंदर घुस जाती है तथा सूंडी बिनौलों को नष्ट कर देती है ग्रसित गोले समय से पहले खुल जाते है, गोलों में छेद होने से दूसरे सूक्ष्म जीवियो जैसे कवक आदि को भी आक्रमण करने का मौका मिलता है, जिससे रुई की गठिया किस्म प्राप्त होती है। इस कीट की लम्बाई 7 मि.मी. एवं जिसका पंख विस्तार 16 मि.मी. तथा शरीर का रंग गहरा भूरा होता है। तथा पंखो के बाहरी किनारो पर लम्बे हल्के भूरे बाल भी पाये जाते है। ये कीट प्रायः शाम के समय ही निकलता है।

कपास का लाल कीड़ा

इसे लाल मत्कुण और गंदजोर आदि नामो से भी जाना जाता है। इस कीट के प्रौढ़ और शिशु दोनों ही क्षति पहुंचाते हैं। प्रौढ़ तथा शिशु पत्तियों, कोमल तनों, फलों और बीजों का रस चूषते हैं फलस्वरूप पत्तिया पीली पड़कर मुरझा जाती है, जिससे बीज व रेशा ख़राब बनते है। जिससे बीज बोने तथा तेल निकालने योग्य नहीं रहता है यह लाल रंग का कीट होता है, जिसकी आंखे काली उभरी हुई होती है, तथा अगले पंखो पर एक–एक काला धब्बा होता है, तथा शरीर का निम्न तल भी लाल होता है। इस कीट की मादा 18 मि. मी. तथा नर 13 मि.मी. लम्बा होता है। प्रौढ़ कीट नवंबर से मार्च के प्रारम्भ तक शीत निष्क्रियंता में रहता है।

नियंत्रण

कर्षण क्रियाये

- गर्मियों के समय गहरी जुताई करके कपास के हानिकारक कीटों को नष्ट किया जाता है, तथा साथ ही साथ खरपतवारों को खेत से मुक्त कर देना चाहिए।
- फसल की देरी से बुआई करने से बचना चाहिए।
- शुरूआती चरण में कीट को कम करने के लिए कपास में एक अंतर फसल के रूप में लोबिया या सोयाबीन लगाना चाहिए।
- कीट प्रतिरोधी किस्मो का उपयोग करना चाहिए।

यांत्रिक नियंत्रण

- कीटों को हाथ से पकड़कर नष्ट कर देना चाहिए।
- कीट ग्रसित पौधों को फसल से निकालकर नष्ट कर देना चाहिए।
- कीटों को कीट प्रपंचो से पकड़कर नष्ट कर देना चाहिए।

जैविक नियंत्रण

- कीटो के प्राकृतिक शत्रुओ का उपयोग करना चाहिए।
- प्राकृतिक शत्रु ऐसे होने चाहिए जो किसी विशेष कीट पर ही निर्भर रहे।
- कीटो के अण्ड परजीवियो का उपयोग करना चाहिए जैसे ट्राईकोग्रामा।
- क्राइसोपर्ला कॉर्निया का उपयोग करना चाहिए।
- चेइलोमेन्स सेक्समाकुलता 1.5 लाख प्रौढ़/हैक्टर का उपयोग करते है।
- बेसिलस थुरंजैनसिस 1.5 किलोग्राम प्रति हैक्टर का उपयोग करना चाहिए।

रासायनिक कीट नियंत्रण

- इमिडाक्लोप्रिड 200 एस.एल. 0.3 मि. ली./ली. का उपयोग करना चाहिए।
- ऐसिफेट 70 एस.पी. 2.0 मि.ली./ली. का उपयोग करना चाहिये।
- साइपरमेथ्रिन 10 ईसी. 10 मि.ली. /ली. का उपयोग करना चाहिए।
- ट्राईजोफॉस और प्रोफेनोफोस का उपयोग करना चाहिए।